International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 05-08-2020; Accepted: 20-08-2020; Published: 06-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 04-06

भारत की लिपियॉ एवं देवनागरी लिपि

बेबी श्रीमंत खिलारे
दादा पाटील महाविद्यालय, कर्जत, अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत

प्रस्तावना

भाषा अपने मूल रूप में ध्वनि पर आधारित होती हैं। ध्वनियॉ ही उच्चारित होती है और सुनी जाती है। इस प्रकार भाषा की काल और स्थान की दृष्टि से सीमा हैं। वह केवल तभी सुनी जा सकती हैं जब बोली जाती है तथा वहीं तक सुनी जा सकती हैं। जहॉ तक आवाज आ सकती हैं। काल और स्थान की इस सीमा के बंधन से भाषा को निकालने के लिए लिपि का जन्म हुआ। आरंभ में मनुष्य ने इस दिषा में जो कुछ भी किया वह इस दृष्टि से नही किया था कि उससे लिपि विकसित हो बल्कि जादू टोने के लिए कुछ रेखाऍ खिंची गई या धार्मिक दृष्टि से किसी देवता का प्रतीक या चित्र बनाया गया था या पहचान के लिए अपने–अपने घडे या अन्य चीजों पर कुछ चिह्न बनाए गए ताकि बहुतों की ये चीजें जब एक स्थान पर रखी जाए तो लोग सरलता से अपनी चीज पहचान सके या स्मरण के लिए किसी रस्सी या पेड की छाल आदि से गॉठे लगाई गई और बाद में इन्हीं साधनों का प्रयोग अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए उपयोग किया गया और धीरे–धीरे विकसित होकर लिपि बन गई।

लिपि षब्द का अर्थ

लिपि षब्द संस्कृत के लिप् धातु से बना हैं जिसका अर्थ हैं लपेटना। मानव भाषा को अंकित करने का साधन लिपि हैं। जब भाषा का विकास हो गया तब उसको नेत्र ग्राहय बनाने के लिए दूर सुदूर व्यक्ति तक अपने भाव विचार पहुॅचाने के लिए भावी पीढी के अपनी ज्ञानराषि से परिचित कराने के लिए जाने अनजाने प्रयत्न होते रहे। प्रारंभ में जादू–टोने के लिए खींची गई लकीरें, धार्मिक प्रतीकों के चित्र घडों आदि पर बनाए गए चित्र इत्यादी लिपि की सामग्री थी।

लिपि का इतिहास

भाशा की तरह लिपि का प्राचीनतम स्वरूप और काल विवादास्पद है। निष्चित रूप से यह नही कहा जा सकता कि कब मनुष्य ने लिपि के रूप में भाव प्रकाषन का कार्य आरंभ किया। प्राचीनतम उपलब्ध सामग्री के आधार पर कहा जा सकता है कि "4,000 इ. पू. के मध्य तक लेखन की किसी भी अभिव्यक्ति पद्धति का कहीं भी विकास नही हुआ था और इस प्रकार के प्राचीनतम अव्यवस्थित प्रयास 10,000 इ.पू. से भी कुछ पूर्व किए गये थे। इसके बीच में 10,000 इ.पू. से 4,000 इ.पू. तक लिपि का विकास धीरे–धीरे होता रहा।"[1]

भारतीय लिपियॉ

प्राचीन भारतीय लिपियों के अंतर्गत तीन लिपियों का अध्ययन किया जाता है 1. सिंधु घाटी की लिपि 2. ब्राह्मी लिपि 3. खराष्टी लिपि

1. सिंधु घाटी की लिपि

भारत में लिखने की कला का ज्ञान लोगों को अत्यंत प्राचीन काल से हैं इसको प्राचीनतम नमुने सिंधु घाटी में मिले हैं। हेरास, स्मिथ तथा हंटर ने इसे समझने और पढने का प्रयास किया हैं किंतु अभी तक किसी को सफलता नही मिल सकी हैं।

सिंधु घाटी की लिपि की उत्पत्ति

सिंधु घाटी की लिपि की उत्पत्ति के विषय में प्रधानतः तीन मत हैं।

क) द्रविड उत्पत्ति

इस मत के समर्थको में एव् हेरास तथा जॉन मार्षल प्रधान है। इन लोगों के अनुसार सिंधुघाटी के सभ्यता द्रविडों की थी और वे लोग इस लिपि के जनक तथा विकास करनेवाले थे। इस मत के समर्थकोंके तर्क पुरातत्वव्यताओं को इतने सषक्त नही लगे हैं कि उन्हें स्वीकार किया जा सके।

ख) सुमेरी उत्पत्ति

एल.ए.वैडेल तथा प्राणनाथ के अनुसार सिंधु घाटी की लिपि सुमेरी लिपि से निकली है। "वैडेल के अनुसार सिंधु की घाटी में 4,000 इ.पू. सुमेरी लोग थे और उन्हीं की भाषा तथा लिपि वहॉ प्रचलित थी।"[2] वस्तुतः प्राचीन भातर मध्य एषिया, कीट तथा इजिप्त की पुरानी लिपियॉ चित्रलिपि थी। और व्यापारिक संबंधों के कारण उनमें कुछ साम्य भी हैं किंतु आज इतने दिन बाद यह कहना कठिन हैं कि कौनसी लिपि के निर्माता कौन थे?

ग) आर्य या असुर उत्पत्ति

कुछ लोगों के अनुसार सिंधु की घाटी में आर्य या असुर (जो जाति तथा संस्कृति में आर्य से संबंध थे) रहते थे और इन्ही लोगों ने इस लिपि का निर्माण किया। परंतु वस्तुस्थिति यह हैं कि आधार–सूत्र की कमी के कारण इस लिपि की उत्पत्ति या उत्पत्ति–स्थान के संबंध में निष्चय के साथ कुछ नही कहा जा सकता।

2. ब्राह्मी लिपि

यह भारत वर्ष की प्राचीनतम लिपि हैं। "इसलिए कि इसके प्राचीनतम लेख 5 वीं षताब्दी इ.पू. से लेकर 350 इ.पू.तक मिले हैं।"[3] यह लिपि अन्य लिपि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक थी। इसके प्राचीनतम नमुने बस्ती जिले में प्राप्त पिपरावा के स्तुप में तथा अजमेर जिले के बल्ली गॉव के षिलालेख में मिले हैं।

ब्राम्ही लिपि के नामकरण के संबंध में विद्वानों में काफी मतभेद हैं। कुछ मत इस प्रकार हैं–

1. धार्मिक भावना से इस मत का निर्माता ब्रह्माजी को माना गया हैं। इसी आधार पर इस लिपि को ब्राम्ही कहा गया हैं।
2. चीनी विष्वकोष फा–वान–षु–लिन में ब्रह्म या ब्रह्मा नाम के आचार्य को इसका निर्माता बनाकर उन्ही के नाम पर इसे

ब्राह्मी कहा गया हैं।
3. डॉ. राजबली पांडेय के अनुसार भारतीय आर्या ने ब्रह्म (वेद अर्थात ज्ञान) की रक्षा के लिए इसको बनाया। इस आधार पर इसका नाम ब्राह्मी पडा होगा।
4. कुछ लोगों के कथनानुसार यह ब्राह्मण अर्थात पढें–लिखे समाज की लिपि थी, इसलिए इसका नाम ब्राह्मी पडा।"[4]
5. ब्राह्मी लिपि के विषय में प्रायः उपर्युक्त आधार मात्र अनुमान पर ही है।

नामकरण की तरह इसकी उत्पत्ति के संबंध में भी विद्वानों में मतभेद हैं। ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति भारत में माननेवाले विद्वानों के भी दो वर्ग हैं

1. द्रविडिय उत्पत्ति 2. आर्य उत्पत्ति।

एडवर्ड थामस तथा अन्य विद्वानों का मानना है कि ब्राह्मी लिपि का निर्माण द्रविड लोगों ने किया। डॉ. सन लासन थामस कनिघन इ. विद्वानों का विचार है कि आर्यों ने ही किसी प्राचीन चित्रलिपि से इसका निर्माण किया था। सिंधुघाटी की चित्रलिपि इसका प्रमाण हैं। भारतीय विद्वानों में प. गौरीषंकर हीराचंद ओझा डॉ. तारापुरवाला डॉ. बाबुराम सक्सेना इ. विद्वानों का यही कहना हैं कि ब्राह्मी लिपि भारतवर्ष के आर्यो की अपनी खोज से उत्पन्न किया हुआ अविष्कार है। इसकी प्राचीनता और सर्वांग सुंदरता से चाहे इसका कर्ता ब्रह्म देवता माना जाकर इसका नाम ब्राह्मी पडा।

वस्तुतः ब्राह्मी लिपि का विकास सिंधुघाटी की लिपि से ही माना जाता है। मौर्य युग में ब्राह्मी लिपि पूर्ण विकसित थीं। इस युग में लिखित प्राकृत षब्दों से यह ज्ञात होता हैं कि यह लिपि व्दित्व व्यंजनों को लिखने में समर्थ थी। 'वक्स' षब्द 'बस' या वास रूप में लिखा जाता था। भारत की द्रविड लिपियों को छोडकर षेश समस्त लिपियॉ ब्राह्मी से विकसित हैं। ब्राह्मी भारत में सिंहल तक पहुॅच चुकी थी। आगे चलकर गुप्तों के षासनकाल में इसे गुप्त ब्राह्मी कहा गया। उस समय इसका प्रचार–प्रसार दक्षिण–पूर्व एषिया, मध्य एषिया तक हो गया, जहॉ की अनेक आधुनिक लिपियों का विकास इसी से हुआ हैं।

मध्य एषिया में ब्राह्मी लिपि में ही पुरानी खेतानी तथा'तोखारी' आदि भाषाओं के लेख मिलते हैं। 350 ई. के बाद ब्राह्मी लिपि की स्पष्ट रूप से दो षैलियॉ हो जाती हैं। 1. उत्तरी षैली, 2. दक्षिणी षैली। उत्तरी षैली का प्रचार मुख्यतः उत्तरी भारत में या दक्षिणी षैली का प्रचार दक्षिण भारत में था। इन्ही दो षैलियों में आगे चलकर भारत की विभिन्न लिपियों का विकास हुआ।

3. खरोष्टी लिपि

खरोष्टी लिपि को प्राचीनतम लेख षहबाजगढी और मनसेरा मे मिले हैं। आगे चलकर बहुत से विदेषी राजाओं के सिक्कों तथा षिलालेखों आदि में यह लिपि प्रयुक्त हुई है। इस लिपि को बैक्ट्रियन, काबुलियन, आर्यन, इंडोबैक्ट्रियन इ. नामों से जाना जाता हैं। परंतु अधिक प्रचालित नाम 'खराष्टी' ही हैं।

इस लिपि के नामकरण के बारे में विद्वानों में काफी मतभेद हैं।
1. चीनी विष्वकोष 'फा–वान–षुलिन' के अनुसार किसी 'खराष्टी' नामक व्यक्ति ने इसे बनाया था।
2. यह खरोष्ट नामक सीमाप्रांत से अर्धसभ्य लोगों में प्रचलित होने के कारण इस नाम की अधिकारिणी बनी।
3. इस लिपि का केंद्र कभी मध्य एषिया का एक प्रांत काषगर था और खरोष्ट काषगर का ही संस्कृत रूप हैं।
4. सिलवॉ लेवी के अनुसार खरोष्ट काषगर के चीनी नाम किया–लु–षु–ता–ले का विकसित रूप हैं और काषगर ही इस लिपि का केंद्र रहा हैं।
5. गदहे की खाल पर लिखी जाने से इसे इरानी में 'खरपोष्त' कहते थे और उसी का अपग्रंष रूप खरोष्ट हैं।
6. डॉ. प्रजिलुस्की के मतनुसार यह गदहे की खाल पर लिखी जाने की वजह से यह 'खरपृष्टी' और फिर खरोष्टी कहलाई।
7. आर्मेइक षब्द 'खरोट्ठ' से संस्कृत रूप 'खरोष्ठ' और बाद में खरोष्ठी हुआ।
8. राजबली पांडेय के अनुसार खरोष्टी लिपि के अधिकांष अक्षर गदहे को ओठ के समान बेढंगे अतः यह नाम पडा हैं।
9. डॉ. सुनीतीकुमार चॅटर्जी के अनुसार हिब्रु में 'खरोषय' का अर्थ लिखावट हैं। 'खरोषय' का संस्कृत रूप खरोश्ट और बाद में खरोष्ठी पडा।

इसकी उत्पत्ति को लेकर भी विद्वानों में एकमत नही हैं कुछ लोग कहते हैं कि यह षुद्ध भारतीय लिपि हैं कुछ लोग यह भी मानते है कि खरोश्टी लिपि अर्मेइक लिपि से निकली हैं। राजबली पांडेय अपनी पुस्तक 'इंडियन' पैलोग्राफी में यह सिद्ध किया है कि खरोश्टी षुद्ध भारतीय लिपि हैं। यह मत केवल तर्क पर आधारित हैं। ठोस आधारों की इसमें कमी हैं। जी. बुलर इसे अर्मेइक से उत्पन्न मानते हैं। डॉ. ओझाजी भी इस मत से सहमत हैं। प्रसिद्ध विद्वान डिरिंजर ने भी इस मत का समर्थन किया हैं।

खरोश्टी की ध्वनियों की संख्या सैंतीस हैं। यह दाऍ से बाऍ लिखी जाती हैं। स्वरों तथा मात्राओं में ऱ्हस्व तथा दीर्घ का भेद नही हैं। इस लिपि को पूर्ण वैज्ञानिक नही कहा जा सकता।

देवनागरी लिपि

दक्षिण भारत में इसका नाम नागरी न होकर 'नन्दनागरी' हैं। प्राचीन नागरी से आधुनिक नागरी, गुजराती, महाजनी कैथी राजस्थानी में थिली, बंगला, आसमी आदि लिपियॉ विकसित हुई हैं।

इस प्रकार ब्राह्मी लिपि की उत्तरी षैली से गुप्त लिपि और गुप्त से कुटिल लिपि विकसित हुई हैं। कुटिल लिपि से प्राचीन नागरी और बाद में आधुनिक देवनागरी का विकास हुआ। प्राचीन नागरी का प्रचार–प्रसार 16 वी षताब्दी तक पाया जाता है। इससे स्पश्ट हैं कि देवनागरी लिपि का विकास प्राचीनतम ब्राह्मी से हुआ।

विद्वानों में नागरी षब्दार्थ में पर्याप्त मतभेद हैं। देवनागरी लिपि के नागर नागरी या देवनागरी नाम पडने के कारण बताए गए हैं।

- गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा प्रयोग में लाए जाने के कारण इसका नाम नागरी पडा।
- नागरों में प्रचलित होने के कारण यह 'नागरी लिपि' कहलाई।
- कुछ लोगो के अनुसार ललित विस्तार में उल्लेखित नाम 'नाग लिपि' ही नागरी है अर्थात् 'नाग' से नागर षब्द का संबंध हैं।
- दक्षिण भारत में इसका नाम नन्दिनागरी होने के कारण इसका संबंध किसी 'नन्दिसार' नामक राजधानी से जोडा गया हैं।

देवनागरी का विकास

देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के राजा जयभट्ट (सातवी–आठवी षताब्दी) ने एक षिलालेख में किया हैं। "डॉ. त्रिलोक नाथसिंह ने 'सुगम भाशा विज्ञान' पुस्तक में लिखा हैं–"आठवी षताब्दी के राष्ट्रकूट नरेषों के राज्य में इस लिपि का प्रचार था। बडौदा के ध्रुवराज के 9 वी षती के राजकीय आदेषों में इसी लिपि का प्रयोग हुआ हैं। गुजरात में तो 17 वी षताब्दी तक इसी का प्रचार था।"[5]

विकासात्मक दृष्टि से देखा जाया तो नागरी के वर्णों में दसवी षताब्दी में क्रमषः विकास होता रहा हैं। वास्तव में ग्यारहवी

षताब्दी से नागरी लिपि का पर्याप्त विकास हो गया था और बारहवी सदी की लिपि का वर्तमान रूप मिलता है फिर भी इ और धी की आकृति पुरानी हैं। दसवी सदी के अनेक वर्ण आधुनिक वर्णो से अधिक भिन्न हैं।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता

देवनागरी लिपि भारत की प्रमुख लिपि हैं। भारतीय संविधान ने इसे राजलिपि राश्ट्रलिपि के पद पर प्रतिश्ठित किया हैं। संपूर्ण संस्कृत साहित्य की रचना इसी लिपि में हुई हैं। चाहे वह साहित्य उत्तर भारत का हो या दक्षिण भारत का। देवनागरी अनेक आर्य भाशाओं की लिपि हैं। इसकी लोकप्रियता दिन–ब–दिन बढती जा रही हैं। इसी कारण समस्त भारतीय भाशाओं की लिपि देवनागरी ही होनी चाहिए।

किसी भाशा ध्वन्यात्म प्रतिनिधित्व करनेवाली लिपि को वैज्ञानिक और पूर्ण लिपि कहलाती हैं। जब हम देवनागरी लिपि की तुलना संसार की अन्य लिपियों रोमन अरबी आदि से करते हैं तो पता चल जाता है कि उन लिपियों की अपेक्षा देवनागरी में कुछ ऐसे गुण तथा विषेशताएँ है जिसके फलस्वरूप उसे वैज्ञानिक लिपि कहा जाता हैं।

के गुण तथा विषेशताएँ

1. देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है क्यों कि इसमे संसार की लगभग सभी भाशाओं की ध्वनियों को उच्चारित एवं प्रतिनिधित्व करनेवाले लिपि चिहन विद्यमान हैं।
2. प्रत्येक ध्वनि के लिए एक स्वतंत्र लिपि चिह्न होने चाहिए। एक के लिए चिह्न या अनेक के लिए एक लिपि चिह्न अवैज्ञानिकता की सूचक है। देवनागरी में प्रत्येक ध्वनि के लिए स्वतंत्र एक–एक लिपि चिहन हैं जबकि संसार की अन्य लिपियों में यह व्यवस्था नही है। जैसे रोमन और उर्दू। अंग्रेजी में ब्ए्फए्ज्ञ तीन लिपि चिह्न है और उच्चारित ध्वनि ‘क’ एक ही है।

उदाहरण ब्ंज त्र कॅट, ज्ञपजम त्र काइट, फनममद त्र क्वीन, बैमउपेज त्र केमिस्ट, ठवग त्र बॉक्स। इस प्रकार रोमन लिपि में ‘क’ ध्वनि कि लिए ज्ञए ब्ए ब्ध्ए ब्ज्ञए फ तो कभी अषता ग ;ठवगद्ध का प्रयोग होता हैं। इसी प्रकार ‘ष’ के लिए ‶;भ्ए‶प्द्ध ष्क्ष के लिए (थ्ए चे) आदि उर्दू लिपि में भी ‘स’ ध्वनि के लिए तीन लिपि चिहन हैं – ‘से’, स्वाद, ‘सीन’। इसी प्रकार ‘जे’ के लिए ‘जे’ तथा ‘जोय’ इस प्रकार एक लिए अनेक या अनेक के लिए एक लिपि चिहनों का प्रयोग अवैज्ञानिकता के सूचक हैं।

3. देवनागरी लिपि के अक्षरों का वर्गीकरण वैज्ञानिक रीति से किया जाता हैं। नगरी वर्णमाला स्वर और व्यंजन के नाम से अभिहित हैं। यूरोपीय और अरबी आदि लिपियों की भॉति स्वर और व्यंजन को एक साथ नहीं मिला दिया गया हैं। नागरी में स्वरों का ऱ्हस्व और दीर्घ विभाजन उत्पन्न वैज्ञानिक है। व्यंजनों के उच्चारण के अनुसार वर्गीकरण नागरी की सबसे बडी उपलब्धि है।

1. कंठय – क, ख, ग, घ, ड.
2. तालव्य – च, छ, ज, झ, त्र.
3. मूर्धन्य – ट, ठ, ड, ढ, ण.
4. दंत्य – त, थ, द, ध, न.
5. .ओश्टय – प, फ, ब, भ, म.
6. देवनागरी लिपि में वर्ण ध्वनियों के उच्चारण स्थान को ध्यान में रखकर पंक्तिबद्ध बिठाए गए हैं। जैसे ध्वनियॉ कंठय से षुरू होकर ओंठो तक संपन्न होती।

देवनागरी के दोश या त्रुटियॉ

1. इसकी कुछ ध्वनियों का मूल उच्चारण अब यथावत नही रह गया हैं किंतु उनका प्राचीन चिह्न ज्यों का त्यों व्यवहार में ला रहे हैं। जैसे ‘ऋ’ का उच्चारण रि होता हैं किंतु ऋषि, ऋतु आदि षब्दों में लिखे वही पुराने चिह्न जा रहे हैं। यही स्थिति ‘श’ की है। इसका उच्चारण भी ‘स’ या ‘ष’ हो गया है।
2. संयुक्त व्यंजन ‘ज्ञ’ का उच्चारण अब ‘ग्य’ हो गया है। अतएव् इसके अनुसार लिपि चिह्न में भी परिवर्तन होना चाहिए।
3. एक ही ‘र’ ध्वनि के लिए चार लिपि चिह्नों के कारण परशानी होती है। जैसे रमेष, कार्य, पत्र, कृष्ण, राष्ट्र, क्रिया आदि षब्दों में आगे, ऊपर, नीचे, बीच में या अंत में ‘र’ ध्वनि है। एक ‘र’ के इतने उप वर्ण हैं। अतः अलग अलग लिपि चिह्न होने चाहिए।

निश्कर्ष

निश्कर्षतः हम कह सकते है कि अपने भाव तथा विचारों की अभिव्यक्ति के लिए जिस प्रकार भाषा का विकास हुआ उसी प्रकार लिपि का भी विकास हुआ। वैसे देखा जाए तो भारत में लिखने की कला का ज्ञान लोगों को अत्यंत प्राचीन काल से हैं। सिंधु घाटी की लिपि के बारे विद्वानो में काफी मतभेद हैं कोई कहता है इसकी उत्पत्ति द्रविड से हुई है तो कोई कहता है सुमेरी से तो किसी का मत है इसकी उत्पत्ती आर्य से हुई है। वैसे ब्राहमी लिपि के नामकरण को लेकर भी विद्वानों में मतभेद हैं। नामकरण की तरह इसकी उत्पत्ति को लेकर भी विद्वानों में काफी मतभेद हैं। वस्तुतः ब्राहमी लिपि का विकास सिंधुघाटी से ही माना जाता हैं। किंतु ये लिपि अन्य लिपि की तुलना में काफी वैज्ञानिक थी। खरोष्टी लिपि की उत्पत्ति को लेकर भी विद्वानों में मतभेद हैं। कोई इसे भारतीय लिपि कहते है तो कोई आर्मेषक लिपि कहते हैं। इस लिपि की स्वरों तथा मात्राओं में ऱ्हस्व तथा दीर्घ का भेद नही है। इस लिपि को पूर्ण वैज्ञानिक नही कहा जा सकता। देवनागरी लिपि का विकास प्राचीनतम ब्राह्मी से मानते है। विद्वानों में नागरी षब्दार्थ को लेकर भी काफी मतभेद है मगर देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि मानते हैं। देवनागरी लिपि भारत की प्रमुख लिपि है। भारतीय संविधान ने इसे राजलिपि राष्ट्रलिपि के पद पर प्रतिष्ठित किया हैं। देवनागरी की लोकप्रियता दिन–ब–दिन बढती जा रही है। इसी कारण इसकी मॉग बढती जा रही है कि समस्त भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी ही होनी चाहिए। निश्कर्षतः हम कह सकते है कि देवनागरी लिपि सभी लिपियों की तुलना में अधिक सरल वैज्ञानिक तथा देष की सांस्कृतिक परंपरा के अनुकूल है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि विष्व की कोई लिपि इसके समकक्ष में ठहर नही सकती।

संदर्भ सूची

1. भाषाविज्ञान के अधुनातम आयाम एवं हिंदी भाशा – डॉ. अंबादास देषमुख, पृश्ठ–473, षैलजा प्रकाषन, 57–पी, कुंजविहार –11 कानपुर।
2. भाशा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृश्ठ, 458, किताबमहल, 18–बी, न्याय मार्ग, अशोक नगर, इलाहाबाद।
3. भाशाविज्ञान के अधुनातम आयाम एवं हिंदी भाशा–डॉ. अंबादास देषमुख, पृश्ठ – 476
4. वही, पृश्ठ – 476
5. वही, पृश्ठ – 482